दीपावली महापर्व : 14 नवम्बर 2020

पंचपर्व का तीसरा दिवस जो होता है वह लक्ष्मी पूजा का दिन होता है। इसे हम दीपावली के नाम से भी जानते हैं। इस दिन अमावस्या की रात्रि होती है जिसे महानिशा, कालरात्रि आदि नामों से भी जाना जाता है। यदि अमावास्या आधी रात तक हो, तो उसी दिन लक्ष्मी-पूजा करनी चाहिये। इसको 'महारात्रि' भी कहते है। रात्रि में शुभ मुहूर्त्त में लक्ष्मी और कुबेर का पूजन होता है। इस दिन निर्जल व्रत करना चाहिए या फिर फलाहार या दूध लेना चाहिए। सन्ध्या से रात्रि भर घर का प्रत्येक भाग प्रकाशित रखकर जागरण करना चाहिये। दूसरे दिन सवेरे (दीपावली के दिन) दही, दूध, आदि से पार्वण-श्राद्ध करना चाहिये, फिर महालक्ष्मी को दीप-दान कर और श्वेत वस्त्र पहनकर भोजन करना चाहिये। इस दिन श्वेत वस्त्र पहनने चाहिये और पूजा में श्वेत पुष्प ही काम में लेने चाहियें। लक्ष्मी पूजा का हमारे देश में कितना अधिक महत्व ह आईये जानें.!!

भारत के सम्पूर्ण त्यौहारों में दीपावली का अपना विशेष स्थान है। इस पुनीत पर्व के साथ हमारे युग-युग का वह इतिहास ओतप्रोत है जिसकी कि आज के स्वतन्त्र वातावरण में हमें भारी आवश्यकता है। यही कारण है कि जिस उल्लास और उत्साह के साथ समस्त भारत में यह त्यौंहार मनाया जाता है, वह अन्य पर्वों पर कम ही दिखलाई पड़ता है। आप किसी भी प्रान्त में चले जाइए। इस अवसर पर सर्वत्र ही आपको नव उत्साह और एक नई उमंग के दर्शन होंगे। घरों में कई सप्ताह पूर्व इस समारोह की तैयारी होती है और अमावस्या की रात्रि दीपक के प्रकाश से जगमगा उठती है। स्त्री, बालक, वृद्ध, युवा, सभी आनन्द-विभोर हो वरदायिनी माँ लक्ष्मी की उपासना करते हैं और उससे अपने प्रदीपालोकित गृह में पधारने की अभ्यर्थना करते हैं। भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में दीपावली का सामान्य रूप उपलब्ध होता है। पंजाबादि प्रदेशों में इस अवसर पर अपने-अपने भवनों पर पताकायें लहराने की प्रथा भी है।

इन सबकी पृष्ठभूमि क्या है, इन प्रथाओं का मूल कहाँ से आरम्भ होता है और दीपावली का वर्तमान रूप कब से प्रारम्भ हुआ इस विषय में इदमित्थम् कुछ भी कहना असम्भव है। ऐतिहासिक पर्यालोचन बताता है कि कृषि-प्रधान भारत में आज से सहस्रों वर्ष पूर्व इस उत्सव का प्रचलन ऋतुपर्व के रूप में हुआ था। चूँकि इस समय तक शारदी फसल पककर लोगों के घरों में आ जाती थी, अन्न-भण्डार धन-धान्य से भर जाते थे, रूई कपास के आ जाने से लोगों को वर्ष भर के लिए वस्त्रों की चिन्ता से छुटकारा मिल जाता था, अतः जनता के हृदय का उल्लास दीपमालिका जैसे पर्व त्यौंहार के रूप में फूट पड़ना स्वाभावि क ही था।

लक्ष्मी पूजा का महत्व-

दीपावली पर्व में लक्ष्मीपूजन समावेश का इतिहास बहुत मनो रंजक एवं महत्त्वपूर्ण है। सनत्कुमार-संहिता में लिखा है-'एक बार दैत्यराज बलि ने समस्त भूमण्डल पर अधिकार कर लक्ष्मी सहित सम्पूर्ण देवताओं को अपने कारागार में डाल दिया और भूमण्डल पर एक छत्र शासन करने लगा। लक्ष्मी के अभाव से समस्त संसार क्षुब्ध हो उठा। यज्ञ यागादि सब बन्द हो गए। उस समय देवताओं की प्रार्थना पर भगवान् विष्णु ने 'वामन' रूप धारण करके बड़े कौशल से उस पराक्रमी दैत्य की आसुरी शक्ति पर विजय प्राप्त की और लक्ष्मी को उसके बन्धन से मुक्त किया। इससे समस्त संसार में हर्ष की एक अपूर्व लहर छा गई। आसुरी शासन से मुक्त प्रजा के हृदयों में प्रकाशमान वह हर्ष-ज्योति दीपकों का साकार रूप धारण कर अखिल विश्व में जगमगा उठी। इस अवसर पर भगवती लक्ष्मी का विशेष रूप से पूजन सम्मान हुआ क्योंकि वे बलि के कारागार की कठोर यन्त्रणाओं को सहकर चिरकाल के अनन्तर मुक्त हुई थीं। इस कथानक के काव्यांश को छोड़ देने पर इससे सीधा अर्थ यही ध्वनित होता है कि दैत्यराज बलि ने प्रजा के ऊपर भारी कर आदि लगाकर उनके समस्त लक्ष्मी-धन को अपने राजकोष में संचित कर डाला, यहाँ तक कि धनाभाव से समस्त संसार क्षुब्ध हो गया। तब भगवान् विष्णु ने वामन रूप द्वारा अपने कौशल से उस दैत्य को परास्त कर राजकोष में संचित समस्त धन को संसार में विभक्त कर दिया, फलतः 'आर्थिक क्रान्ति' का महान् पर्व होने के कारण यह समस्त भारत का स्मरणीय पर्व बन गया।

दीपावली की कथा-

एक समय मुनियों ने सनत्कुमार जी से पूछा-हे महात्मन्! अब आप हमें लक्ष्मी पूजन का कारण बताइये तथा साथ में अन्य देवताओं के पूजे जाने का भी कारण बताइये। मुनियों की यह बात सुनकर श्री सनत्कुमार बोले-हे मुनियो! आप लोगों ने जो प्रश्न किया है उसे ध्यानपूर्वक सुनो। यही प्रश्न धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान, श्रीकृष्ण से पूछा तब भगवान ने कहा-हे धर्मराज सुनो, दैत्यराज बलि के राज्य में सारी प्रजा सुखी थी, किसी को कष्ट नहीं था, सब लोग नियमानुसार रहते थे, यज्ञ आदि कर्म करते थे। एक बार बलि ने १०० अश्वमेघ यज्ञ करने की प्रतिज्ञा की। अतः उसने ९९ अश्वमेघ यज्ञ कर लिये। जब सौवां यज्ञ करने की उसने तैयारी की तो इंद्र बड़ा भयभीत हुआ और सोचने लगा अगर इसने सौवां यज्ञ कर लिया तो यह कहीं मेरा सिंहासन न छीन लें। अतः भय से कांपता हुआ ब्रह्मा, रूद्र आदि देवताओं के साथ क्षीरशायी भगवान विष्णु के पास पहुंचा। वहां सब देवता, अनेक पुरूष और भक्त आदि मंत्रों से भगवान की स्तुति करने लगे। तब भगवान प्रगट होकर बोले-हे इन्द्रादिक देवताओ! आप लोग इतने दुःखी क्यों हैं? तब देवराज इंद्र ने बलि के यज्ञ का सारा हाल कह सुनाया। यह सुन भगवान बोले-हे इंद्र! तुम सब देवता अपने-अपने घर को जाओ। मैं तुम्हारे भय को खत्म कर दूंगा। तब भगवान वामन का अवतार धारण कर राजा बलि के पास गये, जहां वह अंतिम यज्ञ कर रहा था। बलि से सत्कार किये जाने पर भगवान ने तीन पग पृथ्वी का दान मांगा। बलि ने दान संकल्प कर दिया। भगवान ने एक पग में सारी पृथ्वी दूसरे में अंतरिक्ष नाप लिया और तीसरा उसके सिर पर रखा। फिर भगवान ने बलि से वर मांगने को कहा। बलि ने कहा-हे भगवन्! कार्तिक के कृष्णपक्ष (कार्तिक वदी) की त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावस्या के दिन पृथ्वी पर मेरा राज्य रहे। संपूर्ण प्रजा खूब दीप-दान आदि कर श्री लक्ष्मी जी का आह्वान पूजन करें और लक्ष्मीजी उनके घर सदैव विराजमान रहें और जो श्रद्धानुसार पूजन न करें उन पर लक्ष्मीजी कुपित हों, दरिद्री होने का शाप दे दें। इस प्रकार भगवान ने सब देवताओं को भय से मुक्त कर अभयदान दिया। इसी कारण श्री लक्ष्मीजी के साथ-साथ देवताओं की भी पूजा की जाती है।

भगवान बोले-हे राजन्! मैं तुमको एक कथा और सुनाता हूँ ध्यान पूर्वक सुनो। मणिपुर नाम के एक नगर में एक राजा राज्य करता था, उसकी स्त्री बहुत ही सुंदर, सुशील, सर्वगुण संपन्न एवं पतिव्रता थी। एक दिन

पंचपर्व का तीसरा तथा मुख्य दिवस लक्ष्मी पूजन

वह अपनी प्यारी सखियों के साथ महल की छत पर बैठी हुई हास्य विलास कर रही थी। उसने मणि मणिक्य आदि से जड़ा हुआ नौलखा हार उतार कर समीप ही मुंडेर पर रख दिया। शीघ्र ही एक चील उस हार को अपनी चोंच में दबाकर उड़ गयी। रानी यह देखकर बहुत ही उदास हुई और सारा हाल राजा से कह सुनाया। राजा चील पर बड़ा कुपित हुआ, पर करता क्या रानी को समझाते हुए बोला-प्रिये! मैं तुम्हारा हार जहां पर भी चील डालेगी वहां से मंगवा दूंगा चिन्ता न करो। यह कहकर राजा सभा में गया और मुनादी (ड्यौडी) वालों को बुलाकर कहा तुम लोग मेरे राज्य में ड्यौडी फेर कर कहो कि जो कोई रानी का नौलखा हार लाकर देगा। राजा उसको मुंह मांगा इनाम देगा। यह सुन एक बुढ़िया राजा के पास पहुंची और वह हार दे दिया। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और इनाम मांगने को कहा। बुढ़िया ने कहा-राजनू! आज से आठवें रोज दीपोत्सव है, महालक्ष्मी जी का पूजन है। अतः राज्य में कोई भी आदमी दीपावली न मनावें सिर्फ मैं दीपावली मनाऊंगी और लक्ष्मी जी का पूजन करूंगी। इसलिए तेल, बत्ती, दीपक आदि सब सामग्री आप मेरे यहां भिजवा दें। यह सुन राजा आश्चर्यचकित हो बोला ऐसा करने से तुझे क्या लाभ होगा। बुढ़िया बोली आज के दिन व्रत एवं लक्ष्मी पूजन से तथा दीप-दान करने से लक्ष्मीजी प्रसन्न होती है और उसके घर सदैव निवास करती हैं। राजा ने कहा-यह मैं भी करूँगा। बुढ़िया बोली पहले मैं करूंगी बाद में तुम करना। ऐसा करने पर राजा और बुढ़िया के घर अतुल संपत्ति, धन, दौलत, हाथी, घोड़े आदि हो गये। अतः हे धर्मराज! यह दीपावली का व्रत पूजन तुम भी करो जिससे खोई हुई राज्य-श्री, पुत्र-पौत्र आदि तुमको प्राप्त हों।

पारदेश्वरी महालक्ष्मी साधना प्रयोग

आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाये तो पारद संसार की सर्वश्रेष्ठ धातु है। यह अपने आप में अद्‌भुत है। पारा जो भगवान भोलेनाथ को तो सर्वाधिक प्रिय है ही, चंचला देवी महालक्ष्मी को भी अतिप्रिय है। पारद शिवलिंग और पारद माला जहाँ साधक को समस्त आध्यात्मिक सिद्धियां एवं सुख प्रधान करने वाले होते हैं, वही पारदेश्वरी महालक्ष्मी जातक को समस्त भौतिक सुख प्रदान करने वाली होती है। पारदेश्वरी महालक्ष्मी शीघ्रफलदायी होती है, जहाँ यह स्थापित होती है वहाँ दरिद्रता तो कभी भटक ही नहीं सकती। लक्ष्मी कहती है कि मुझे वहाँ रहना अतिप्रिय है जहाँ मेरी पारद प्रतिमा स्थापित हो और नित्य मेरी पूजा-अर्चना की जाती हो। जब इतनी विलक्षण शक्तियां भरी हैं पारद प्रतिमाओं में तो फिर हम क्यों ना इनका उपयोग करें। आईये जाने पारदेश्वरी लक्ष्मी. .....!!

पारदेश्वरी महालक्ष्मी, जीवन का सौभाग्य, विश्व की अद्वितीय अद्‌भुत कलाकृति मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त जिसकी स्थापना ही जीवन का सौभाग्य माना जाता है। अन्नधन भंडार, ऋण मुक्ति, धन वर्षा के लिए दुर्लभ महालक्ष्मी विग्रह। जीवन में सभी प्रकार के सौभाग्य तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अद्वितीय। जीवन में प्रथम बार पारद निर्मित महालक्ष्मी विग्रह जिसकी प्रशंसा शास्त्रों में स्वयं कुबेर, इन्द्र आदि देवगणों ने की है। इसे पाना आसान नहीं लेकिन असम्भव भी नहीं। हे भगवती महालक्ष्मी! अपने उपासकों को धन, ऐश्वर्य, भूमि, स्वर्ण कीर्ति, आयु, सम्मानी घोड़े, हाथी, पुत्र, बंधु, बांधव प्रचुर मात्रा में प्रदान करती है, जिससे वे सदैव प्रसन्नचित होकर आपकी उपासना में तत्पर रहें।

पारदेश्वरी स्वयं शक्ति स्वरूपा है और शक्ति के समस्त स्वरूप चाहे वह किसी का भी स्वरूप हो, उसकी स्थापना करने मात्र से साधक अपने आप में ही लक्ष्मीयुक्त बन सकता है। लक्ष्मीवानू पौरूषवान, क्षमतावानू बन सके इसलिए श्री सुक्त में सोलह मंत्र हैं। पिछले हजारों वर्षों से दीपावली के दिन सेठ साहुकार और लगभग सभी लोग अपने घर में पंडितों को बुलाकर श्री सूक्त का पाठ करवाते हैं। पंडित उसका पाठ करके चले जाते हैं, परंतु वास्तव में श्री सूक्त है क्या? यह कोई नहीं समझ सका।

"श्री सूक्त" में लक्ष्मी की आराधना या उसका वर्णन है ही नहीं श्री सूक्त में तो एक पूर्ण विधि स्पष्ट की गई है कि-

- ☐ कैसे हम लक्ष्मी को प्राप्त कर सकें?
- ☐ कैसे हम भाग्यलिपि को बदल सकें?
- ☐ कैसे अपने आप को परिवर्तित कर सकें?

यदि आप मान बैठे है कि जो भाग्य में लिखा हुआ है, वही होगा तो फिर तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं फिर तुम्हें कर्म करने की जरूरत नहीं, फिर तुम्हें साधना करने की जरूरत है ही नहीं। इतिहास साक्षी है कि शायद ही कोई भी ऋषि अपने आप में दरिद्र और गरीब रहा हो? वे कैसे दस-दस हजार शिष्यों को भोजन करवाते थे सुबह-शाम। विचार करने वाली बात है कि हमारा कोई भी देवता सूखे हुए कंकाल की तरह नहीं है, न राम हैं, न कृष्ण हैं। फिर हमारा ही चेहरा इतना मलीन कांतिविहिन क्यों है? बुझा-बुझा सा क्यों हैं? इसलिए कि हमने कभी अपने भाग्य को परिवर्तित करने के लिए सोचा ही नहीं। एक विश्वास करके बैठ गये, जो भगवान ने लिख दिया, वह तो होगा ही! यह तो भगवान की कृपा है, गरीबी तो चलती ही रहेगी।

हमने कभी प्रयत्न करके देखा ही नही। हमने कभी इस बात को सोचा ही नहीं कि क्या ऐसी कोई साधना है? क्या ऐसा कोई मंत्र है, जिसके माध्यम से हम श्री सम्पन्न हो सकें।

ऐसी साधना भी है? ऐसा मंत्र भी है? जिसके द्वारा हम श्री लक्ष्मीवानू बन सकते हैं, और आप में इतनी क्षमता तो है परंतु आप अपनी क्षमता को पहचान नहीं सके, क्योंकि "श्री सूक्त" में पूरा वर्णन है, लक्ष्मी को पूर्णता से प्राप्त करने का।

- ☐ हम उसके श्लोक को कब समझेगें?
- ☐ उनका पाठ करने मात्र से कैसे चलेगा?
- ☐ उसको अपने जीवन में कब उतारेंगे?

हमारे पूर्वज इस बात को समझ रहे थे कि ये आने वाली पीढ़ियां इतनी क्षमतावानू नहीं हो पाएंगी, इतनी पौरूषवानू शायद नहीं हो पायेंगी कि स्वयं के पुरूषार्थ से लक्ष्मी को अपने घर में स्थायित्व दे सकें, अतः उन्होंने पारदेश्वरी का वर्णन किया एक प्रयोग दिया, "श्रीसूक्त" को अपने आप में चेतनायुक्त बनाया और हमें सौंप दिया।

हर बार आपने लक्ष्मी का प्रयोग, पूजन, चिंतन किया, लक्ष्मी मंत्र की माला फेरी मंत्र जप किया, कमलगट्टे से भी साधना की और आहुतियां भी दीं-जैसा कहा गया है वैसा किया, मगर आप अपनी क्षमताओं को भूल चुकें है। आप में परिश्रम करने की भावना नहीं रही, बुद्धि और चेतना का एहसास नहीं रहा।

पारदेश्वरी स्थापना क्रिया हेतु आप धनतेरस, दीपावली की रात्रि में सिंह लग्न में या वृष लग्न में पारदेश्वरी लक्ष्मी को स्थापित कर दें।

शास्त्रों में वर्णित है, जो भी व्यक्ति पारदेश्वरी लक्ष्मी स्थापना करता है, वह चाहे कितना ही निर्धन अशक्त और असहाय व्यक्ति हो पारदेश्वरी लक्ष्मी की साधना के माध्यम से लक्ष्मीवानू बनता ही है, ऐश्वर्यवानू बनता ही है, सौभाग्यशाली बनता ही है, उसके घर में लक्ष्मी सहस्त्र रूपों में रहती ही है।

स्थापना विधि-

पूर्ण शास्त्रोक्त विधि-विधान से प्राण-प्रतिष्ठित पारदेश्वरी लक्ष्मी का विग्रह प्राप्त कर लें।

किसी भी कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी (वैसे धनतेरस कुबेर दिवस श्रेष्ठ है) को प्रातः काल पूजा स्थान को स्वच्छ कर लें तथा स्वयं भी स्नान कर सर्वथा नये वस्त्र जो गुलाबी या पीले रंग के हो, धारण कर ले।

अपने सामने किसी बाजोट पर गुलाबी रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी से रंगे चावलो के द्वारा स्वास्तिक अंकित करें तथा उस स्वास्तिक पर एक ताम्र या रजत प्लेट रखकर "श्री" मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्प रखें, उन पुष्पों पर पारदेश्वरी लक्ष्मी को स्थापित करें।

स्थापना के पश्चात् पंचोपचार पूजन संपन्न करें।

(स्नान, चंदन, कुंकुम, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीप, आरती)

पूजन की समाप्ति पर निम्न मंत्र की तीन माला जाप कमल गट्टे की माला से करें। मंत्र जप करते समय अक्षत तथा पुष्प थोड़ा-थोड़ा समर्पित करते रहें।

मंत्र- ।। ॐ ऊँ ऐं ऐं श्रीं श्रीं हीं हीं पारदेश्वरी
सिद्धि हीं हीं श्रीं श्रीं ऐं ऐं ऊँ ।।

मंत्र जप पूर्ण होने के पश्चात् गुलाब पुष्पों की माला विग्रह पर समर्पित करें और श्रद्धायुक्त नमनू करते हुए भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना करें कि वे स्थायी रुप से हमारे घर में निवास करे तथा प्रत्येक दृष्टियों से सम्पन्नता प्रदान करें।

न्यौछावर- 2100/- से प्रारम्भ ☐☐☐